❀ श्रीश्रीगौरांगविधुर्जयति ❀

कविवरमनोहरजीकृत

सम्प्रदायबोधिनी

Vrindavan Das
Govind Kund
Vrindavan, Ma...

प्रथमावृत्ति १०००
फाल्गुनि पूर्णिमा
सं० २०१६
मूल्य ≈)

प्रकाशक—
कृष्णदासबाबा,
कुसुमसरोवर निवासी (मथुरा)

दो बातें—

प्रस्तुत सम्प्रदायबोधिनी ग्रन्थरत्न के निर्म्माणकर्त्ता भक्तमाल टीकाकार श्रीप्रियादासजी के गुरु रसिक प्रवर कविवर श्रीयुत् मनोहरदासजी हैं। आप महाप्रभु गौरांगदेव के परिकर, वृन्दाबन के छै गोस्वामि में प्रसिद्ध श्रीमद्गोपालभट्टगोस्वामिजी के परिकर में श्रीराधारमणजी के सेवक हुए। आपने "राधारमणरससागर" नामक निजकृत ग्रन्थ में अपना परिचय इस प्रकार दिया है कि— "श्रीचैतन्यकृपालु कृपा करि भट्टगोपालै। तिन श्रीनिवासाचार्य्य वर्य्य करुणा कौ आलै॥ रामचरण तिन कृपा चक्रवर्त्ती विख्याता। रामचरणचट्टराज कृपा तिन सारहि ज्ञाता। शुद्ध-भक्ति रसराग तिन करुणा करि दीक्षा दई। दासमनोहर नित्य गुरु पद धूली सिर पर लई।" आपके द्वारा बनाये हुए— (१) राधारमणरससागर (२) सम्प्रदायबोधिनी (३)रसिकजीवनि (४) क्षणदागीतिचिंतामणि ये चारि ग्रन्थ उपलब्ध हैं। श्रीराधा-रमणरससागर पहले सम्वत् २००८ में हमारे द्वारा प्रकाशित हो गया है। दूसरा ग्रन्थ रसिक सज्जनों के सामने प्रस्तुत है। हम आगे रसिकजीवनि एवं क्षणदागीतिचिंतामणि इन दोनों को ग्रन्थकर्त्ता के विस्तृत चरित्र के साथ प्रकाशित करने की चेष्टा में हैं। खोज में "पुष्पचरित" एवं "कवित्तसंग्रह" इन दोनों ग्रन्थ का उल्लेख पाया जाता है, परन्तु अभी दोनों अप्राप्त हैं। निःसन्देह कविवर मनोहरजी उस समय वृन्दावन में परमरसिक शिरोमणि माने जाते थे। बड़े-बड़े महानुभाव उनके संसर्ग में आकर रसिक बन जाते थे। प्रियादासजी ने अपनी भक्तमाल की टीका में कहा है "रसिकाई कविताई जाहि दीनी तिन पाई भई सरसाई हिये नव नव चाय है" इत्यादि। बाबा वंशीदासजी से इस पुस्तक की नकल कापी हमें मिली है एवं इसकी प्राचीन कापी कई स्थानों पर मौजूद हैं। इति।

कृष्णदास बाबाजी

❀ श्रीगौरगोविन्दो जयति ❀

अथ संप्रदाय बोधनी लिख्यते।

◇◇◇◇◇◇

दोहा—चट्टराज कुल कमल रवि, छवि फवि परम उदार।
राम शरण गुरु चरण वर, मनोहर प्राण अधार ॥१॥
चारि संप्रदा सरस घन, वैष्णव गण के भेद।
पद्म पुराण प्रसिद्ध अति, जग में पञ्चम वेद ॥२॥

तथाहि पद्मपुराणे—

संप्रदायविहीना ये मन्त्रास्ते निष्फला मताः।
अतः कलौ भविष्यन्ति चत्वारः संप्रदायिनः ॥१॥
श्री-ब्रह्म-रुद्र-सनकाः वैष्णवाः क्षितिपावनाः इति ॥

तत्रैव—

चत्वारस्ते कलौ भाव्याः संपदायप्रवर्त्तकाः।
भविष्यन्ति प्रसिद्धास्ते ह्युत्कले पुरुषोत्तमात् ॥
गुरुरेकः कृष्णमन्त्रे वैष्णवः साम्प्रदायिकः।
तस्य त्यागादिष्टत्यागश्च्यवते परमार्थतः ॥२॥

दोहा—प्रथम संप्रदा श्री कहूँ, लक्ष्मी ही ते जान।
दूजे श्री चतुरास्य के, नारायन परवान ॥३॥
विष्णुस्वामि तीजे महा, रुद्र कृपा अनुसार।
सनकादिक चौथे दया, कीनी हंसवतार ॥४॥
चारि संप्रदा मूल गुरु, नारायण निरधार।
याते चारौ एक हैं, समझि विचार विचार ॥५॥
यै पद्धति बाँधी प्रवल, न्यारो न्यारो ध्यान।
प्रभु अवतार महन्त जन, जिनके वचन प्रमान ॥६॥

आगम बेद पुराण मथि, तत्व वस्तु निरद्वंद ।
ध्यान भेद अच्युत अगम, पूरण परमानंद ॥७॥

तत्राहि श्रीभागवते प्रथमस्कंधे—

अवतारा ह्यसंख्येया हरेः सत्वनिधेर्द्विजाः ।
यथा विदासिनः कुल्याः सरसः स्युः सहस्रशः ॥
अविदासिनः; उपक्षयशून्यात् इति स्वामी ॥

श्रीमहावाराहे—

सर्वे नित्याः शाश्वताश्च देहास्तस्य परात्मनः ।
हानोपादानरहिताः नैव प्रकृतिजाः क्वचित् ॥

श्रीनारदपंचरात्रे—

मणिर्यथा विभागेन नीलपीतादिभियुतः ।
रूपभेदमवाप्नोति ध्यानभेदात्तथाच्युतः ॥

व्याख्यातं च श्रीवैष्णवतोषण्यां श्रीदशमस्कन्धे द्वितीयाध्याये

त्वमेक एवास्य सतः प्रसूतिरित्यादि गर्भस्तुतौ—
मणिरत्र नानाच्छविधारी वैदुर्य्याख्यो ज्ञेयः ॥

दोहा—श्री महाप्रभू पार्षद प्रगट, रूप गुसांइ प्रमान ।
भागौतामृत लघु तिनहि, संग्रह कियो पुरान ॥८॥
तामें मन दै देखियो, सिद्धांतन के पार ।
अति निगूढ़ समभयौ परै, इनकी कृपानुसार ॥९॥

अथ प्रथम श्रीसंप्रदायः

दोहा—श्री नारायण देव जे, सर्व नियंता जान ।
तिनकी परम प्रिया श्री लक्ष्मी जू पहिचान ॥१०॥
तिनके विष्वक् सैन जू, तिनके श्रीपटकोप ।
तिनके गोप प्रणीत जू, अमल भक्ति की ओप ॥११॥
वोपदेव तिनके भये, मंगल—मुनि तद्दास ।
तिनके मुनि श्रीनाथ जू, भक्त सुदृढ़ विश्वास ॥१२॥

तिनके पुंडरीकाक्ष जू, राम मिश्र तिन सेव ।
पर अंकुस तिनके भये, जामुन मुनि गुरु देव ॥१३॥
तिनके रामानुज भये, भक्ति अचारज ख्यात ।
जाकी भाष्य प्रमान पर, कहि न सकै कोऊ बात ॥१४॥
लछिमन आचारज यथा, नाम कहै नहिं कोय ।
अति आदर संकेत में, रामानुज कहि होय ॥१५॥
कठिन भैया इनकी कृपा, अद्भुत अतुल अनंत ।
भक्तमाल नाभा रचित, तामे कछुक लिखंत ॥१६॥
छप्पै—सहस्रास्य उपदेस करि जगत उधारन जतन कियो ।
गोपुर ह्वै आरूढ उच्च सुर मन्त्र उचारयो ॥
सूते नर परे जागि बहत्तर श्रवनन धारयो ।
तिनतेई गुर देव पद्धति भई न्यारी न्यारी ॥
कुरु तारक शिष्य प्रथम भक्ति वपु मङ्गलकारी ॥
कहुँ कृपण पाल करुणा समुद्र श्रीरामानुज सम नहि बियो॥
सहस्रास्य० ॥१७॥

दोहा—तिनके देवाचार्य भये, तिनके हरियानंद ।
तिनके राघवानंद जू, तिनके रामानंद ॥१८॥
चौदह सै परगट रहैं, वर्ष महा मति धीर ।
जीवन के उद्धार हित, सुखमय सिद्ध सरीर ॥ १९ ॥
साढ़े बारह सिष भये, इनके मुख्य महंत ।
भक्तमाल अवलोकियो, नाभा विरचित संत ॥२०॥
छप्पै—रामानंद रघुनाथ ज्यों, द्वितिय सेतु जग तरण किय ।
अनंतानंद कबीर सुखा, पद्मावत नरहरि ॥
पीपा भावानंद सेन सुरसुर की धरनी हरि ॥
औरौ शिष्य प्रसिष्य एक ते एक उजागर ।
विश्व मंगल आधार भक्ति दशधा के आगर ॥

बहुत काल वपु धारि कै प्रणत जनन कौ पार दिय ।
श्रीरामानंद रघुनाथ ज्यों द्वितिय सेतु जग तरण किय ॥२१॥
दोहा—इन्तेई द्वारे भये आचारज अनुसार ।
और अनेकन जानियो, सिष्यन के विस्तार ॥२२॥
तिनमें अनन्ता नंद जे, तिनके श्री कृष्णदास ।
पैहारी विख्यात गुन, कील्ह सु भजन निवास ॥२३॥
कृष्णदास तिनके भये, तिनके विष्णुस्वामी ।
दास नरायन सिष भये, हृदय राम वड नामी ॥२४॥
वालमीक तिनके भये, गलता में अधिकारी ।
विदित सुयस जग जगमगै, संतन सेवा भारी ॥२५॥
पैहारी के सिष्य इक, अग्रदास सुख रासि ।
जिनके नाभा जू भये, भक्तमाल सु प्रकासि ॥२६॥
श्री अग्रदास कौ और सिष जोगी जू बड़भागी ।
इनके सिष्य प्रधान इक, राम नाम लौ लागी ।२७॥
साधु तत्व तुलसी कहै, दास भजन निर्द्धारी ।
कलि गोरख परचै दियो, इनके देव मुरारी ॥२८॥
वावा मलूकन दास जू, इनको सिष मन भायो ।
वहु विधि सेवा संत की, प्रभु कौ दर्शन पायो ॥२९॥
इनके सिष महाभागवत, रामसनेही नाम ।
भक्ति प्रताप महंत वर, कर मानिकपुर धाम ॥३०॥
इनके घासीराम जू, गुरु भाई सुख रासी ।
सव कछु प्रभु के दरस हित, मनमें रहैं उदासी ॥३१॥
दूजें रामानंद के भये सुर सुरा नंद ।
महिमा महाप्रसाद जिन दरसाई निरद्वंद ॥३२॥
भये माधवानंद जू तिनके सिष्य उजास ।
राम धीर आनंद भये, तिनके सिष्य प्रकास ॥३३॥

तिनके विमलानंद भये, तिनके कमलानंद ।
तिनके भावानंद भये, संतन के आनंद ॥३४॥
तिनके अनुभवनंद भये, धीर धर्म प्रतिपाल ।
प्रचुर विचित्रानंद भये, तितके महा कृपाल ॥३५॥
तिनके विठलानंद भये, भक्ति सुयस विख्याता ।
तिनके वल्लभानंद भये, परम धर्म के ज्ञाता ॥३६॥
तिनके ब्रह्मानंद सुख, सांठर प्रबल प्रताप ।
जग मगाय रही जगत में, सुदृढ़ भक्ति की छाप ॥३७॥
इनमें औरौ भेद इक, सुनहु जान मनिराय ।
सुनत रसायण श्रवण कौ, ताते कहूँ सुभाय ॥३८॥
गुरु भाइ विचित्रानंद के, अनुभवनंद के सिष्य ।
स्यामानंद विख्यात गुण, वीत राग में मुख्य ॥३९॥
तिनके जादौ दास जू, छके सुजन आनंद ।
गिरा गंभीर संत सर्वस धन, तिनके जनगोविंद ॥४०॥
द्वै साखा न्यौरो लिख्यौ, यथा अनुक्रम सार ।
असैं औरौ जानियो, संप्रदाय विस्तार ॥ ४१ ॥
प्रथम ख्याति श्री संप्रदा रामानुजी सु दूजें ।
रामानंदी आजु लौं प्रगट विराजत तीजें ॥४२॥

अथ द्वितीय ब्रह्म संप्रदायः ।

दोहा—नारायण के विधि भये, तिनके नारद जान ।
तिनके वेद व्यास जू, राचे महा पुरान ॥ ४३ ॥
तिनके माधवाचार्य जू, भाष्यकार निरधार ।
भक्ति तत्व अति सुदृढ़ किय, मायावाद कुठार ॥४४॥
पद्मनाभ तिनके भये, नरहरि तिनके दास ।
तिनके माधव जानियो, तिनके छोभ प्रकास ॥४५॥

जयतीरथ तिनके भये, वानी परम पवित्र।
कहि टीका विजय ध्वजी, श्रीभागौत्त विचित्र ॥४६॥
ज्ञानसिंधु तिनके भये, तासु महानिधि धन्य।
तिनके विद्यानिधि भये, गुरु गोपाल अनन्य ॥४७॥
तिनके भये राजेंद्र जू, तिनके भये जय धर्म।
तिनके पुरुषोत्तम भये, भजन बिना नहिं कर्म ॥४८॥
तिनके भये ब्रह्मण्य जू, तिनके तीरथ व्यास।
तिनके लक्ष्मीपति भये, माधवेंद्र विस्वास ॥ ४९ ॥
तिनके हि ईश्वरानंद जू, नीकी विधि करि सेव।
जग सिक्षा हित जगत गुरु, जिनहिं कियो गुरुदेव ॥५०॥
महाप्रभू चैतन्य कौ, प्रथमहिं नीमानंद।
नाम प्रगट पाछें चली, परनाली निरद्वंद ॥ ५१ ॥
प्रथम चलनि याकी कहूँ, ब्रह्म संप्रदा नाम।
मध्वाचार्य पर्य्यंत सब, संतन कह्यौ गुन ग्राम ॥५२॥
अवधि ईश्वरानंद तें माध्व संप्रदा ख्यात।
इनते भये प्रसिद्ध अति नीमानंदी जान ॥५३॥
महाप्रभू पार्षद भये, श्री गोपाल गुरु ख्याति।
गुरु प्रनाली तिन रची, संस्कृत नीकी भांति ॥५४॥

तथाहि श्रीगोपालगुरुगोस्वामी प्रणीत पद्यानि—

श्रीमन्नारायणो ब्रह्मा नारदो व्यास एव च ॥
श्रीलमध्वः पद्मनाभो नृहरिर्माधवस्तथा ॥१॥
अक्षोभो जयतीर्थश्च ज्ञानसिन्धुर्महानिधिः।
विद्यानिधिश्च राजेन्द्रो जयधर्ममुनिस्तथा ॥२॥
पुरुषोत्तमो ब्रह्मण्यो व्यासतीर्थमुनिस्तथा।
श्रीमल्लक्ष्मीपतिः श्रीमन्माधवेन्द्रपुरीश्वरः ॥३॥

ततः श्रीकृष्णचैतन्यः प्रेमकल्पद्रुमो हरिः ।
नीमानदाख्यया योऽसौ विख्यातः क्षितिमण्डले ॥५४॥
दोहा—दुतिय प्रमान प्रसिद्ध अति, प्रभु नित्यानंद भृत्य ।
श्रीपुरुषोत्तम नाम वर, अद्भुत कीर्त्तन नृत्य ॥५५॥
तिनके सिष श्री देवकीनंदन भये कविराज ।
तिनहूँ चारयौ संप्रदा वर्नन किये समाज ॥५६॥
यह विधि ताहू में लिखत, भाषा गौड़ सुदेस ।
देखत सब मन भ्रम मिटे नहीं होत उपहास ॥५७॥
श्रीनित्यानंद जू प्रभू . प्रभु अद्वैताचार्य्य ।
लोकनि के उपदेश हित, चित दै चतुर विचार्य्य ॥५८॥
श्रीमाधवेंद्र जु गुरु किये, दोऊ महा कृपाल ।
श्रीचैतन्य जु भागवत, रचना परम रसाल ॥५९॥
तामें लिखहिं सु देखियो, अति परसिद्ध प्रमान ।
श्रीवृन्दावनदास जू, सुख में सिद्धा स्थान ॥ ६० ॥
अब कहैं माध्व संप्रदाय में, कीन गौर संन्यास ।
ताते कोऊ कहिवो करैं, माध्व संप्रदादास ॥ ६१ ॥
सो जानियै नहिं सर्वथा, माध्व संप्रदा तीर्थ ।
ए गुरु केशव भारती, पूर्व पक्ष भयो व्यर्थ ॥ ६२ ॥
चारि लिखें अरु संप्रदा, चतुर्व्यूह नहि सोय ।
यातें पद्मपुराण में व्यास वचन फिरि जोय ॥ ६३ ॥
तथाहि—अतः कलौ भविष्यन्ति चत्वारः सम्प्रदायिनः ।
श्रीब्रह्म-रुद्र-सनका वैष्णवाः क्षितिपावनाः ॥
दोहा—और एक अचिरज सुनौ माधवेंद्र सन्यासी ।
तिनके सरूपाचार्य जू दक्षिणात्य गृहवासी ॥ ६४ ॥
ए सनकादिक संप्रदा परणाली निरद्वंद ।
तामें श्री महाप्रभू की अति सै कृपानुवंध ॥ ६५ ॥

केशव कशमीरी सहित लिखन भई रस रीति ।
चित दै जो दरसन करै लहै निरन्तर प्रीति ॥ ६६ ॥
नीमानंदी संप्रदा तब ते अतुलित प्रेम ।
शोभा संपति जगमगै ज्यौं जराव भरी हेम ॥ ६७ ॥
पंच प्रकार प्रमान सुनि श्री भागौत विचार ।
प्रत्यक्षरु अनुमान पुनि उपमा कह्यौ सु चारु ॥६८॥
शब्द और ऐतिह्य गनि इनमें पिछले दोय ।
स्वीकृत भये सु भक्त जन जिहि संदेह न कोय ॥६९॥
ताही सों ऐतिह्य कहैं पूर्वा पर विख्यात ।
श्रवण कियो जु परम्परा सो निश्चै है बात ॥७०॥
श्री गौड़ देश अति पूर्व ते अद्यावधि सब कोय ।
माध्व संप्रदा कहत है बाल वृद्ध अरु जोय ॥७१॥
अब नवीन आधुनिक मत सुनिकै भक्त समाज ।
द्विविधा मन में मत करौ पूर्वा पर मत राज ॥ ७२ ॥

अथ तृतीय विष्णुस्वामी संप्रदायः ।

दोहा—श्री नारायण आत्मा महा रुद्र विश्वेश ।
अगम निगम निगूढ़ कहि कियो जगत उपदेश ॥७३॥
तिनके विष्णु स्वामी जू दक्षिण देश प्रसिद्ध ।
तहां प्रणाली पाइयै अनुक्रमनिका सिद्ध ॥७४॥
गोकुलस्थ तिनके भये श्री वल्लभ आचार्य ।
श्रीनंद नंदन सेवा बिना जिनके और न कार्य ॥७५॥
श्री महाप्रभू चैतन्य के दरसन पाय प्रयाग ।
न्योतो करि घर विविध विधि सेवन किय बड़भाग ॥७६॥
विट्ठलेश तिनके भये प्रवल भजन अधिकार ।
जिन बांधी पद्धति अटल वल्लभ कृपानुसार ॥७७॥
प्रथम प्रचुर यह संप्रदा विष्णु-स्वामी नाम ।
दुतिय वल्लभी तृतिय भई विठलेसुरी अनुपाम ॥७८॥

भक्तमाल नाभा रचित तिन में छप्पै एक।
तामें लिखहिं सो देखियो मैं कहा कहूँ विशेषि ॥७९॥

तथाहि छप्पै—

श्री विठ्ठलनाथ ब्रजराज ज्यों लाल लड़ाय के सुख लियो।
राग भोग नित विविध रहत परिचर्य्या तत्पर।
शय्या भूषण वसन रुचिर रचना अपनेकर॥
वह गोकुल वह नन्द सदन दीक्षत को सोहै।
प्रगट विभव जहँ घोष देखि सुरपति मन मोहै॥
वल्लभ सुत बल भजन के कलियुग में द्वापुर कियो।

अथ चतुर्थ श्री सनक संप्रदायः।

दोहा—श्री नारायण अवतार जे हंस परम कारुन्य।
तिनके सनकादिक भये ऊरध रेतानन्य॥८१॥
तिनके एक प्रकास में नारद भये हैं सिष्य।
निंबादित तिनके भये आचारज में मुख्य॥८२॥
इक संन्यासी एक दिन भिक्षा न्योतौ कौन।
करत रसोई सम्रृद्ध की द्यौस ह्वै गयो छीन॥८३॥
पाछें सन्ध्या आरती जती बुलायो जानि।
सूर्य अस्त भोजन नहीं करौ कह्यौ यह बानि॥८४॥
आंगन में इक निंब कौ वृक्ष बड़ो ह्वो आहि।
ता ऊपर आदित्य कौ गगन दिखायो ताहि॥८५॥
करि प्रत्यय भोजन कियो भयो अचंभो देखि।
तातें निंबादित्य मिलि संतन कह्यौ विशेखि॥८६॥
श्री निवास तिनके भये शिष्य महा मति धीर।
सदाचार श्रुति विदित मत सुखमय सिद्ध शरीर॥८७॥
तिनके विश्वाचार्य सिष पुरुषोत्तम आचार्य।
तासु विलासाचार्य जू तासु स्वरूपाचार्य॥८८॥

Vrindavan Das
Govind Kund
Vrindavan, Mathura

माधव आचारज भये तिनके सिष्य प्रधान ।
आचारज वलभद्र भये तिनके सिष्य महान ॥८६॥
तिनके पद्माचार्य भये तिनके श्यामाचार्य ।
तासु गोपालाचार्य पुन तासु कृपा आचार्य ॥९०॥
तिनके देवाचार्य तसु सुंदर भट्ट वखान ।
पद्मनाभ तिनके भये भट्ट महा गुणवान ॥९१॥
तिनके भट्ट उपेंद्र भये तास रामचंद भट्ट ।
तिनके वामन भट्ट भये तिनके श्री कृष्न भट्ट ॥९२॥
तिनके पद्मकार भये भट्ट महामति सिंधु ।
श्रवण भट्ट तिनके भये दीन दुखित जन बंधु ॥९३॥
भूरि भट्ट तिनके भये तिनके माधव भट्ट ।
श्याम भट्ट तिनके भये तिनके गोपाल भट्ट ॥९४॥
वलभद्र भट्ट तिनके भये तिनके गोपीनाथ ।
केशव भट्ट तिनके भये अनुपम सद्गुन गाथ ॥९५॥
तिनके गंगल भट्ट भये वानी परम रसाल ।
केशव कश्मीरी भये तासु प्रताप विशाल ॥९६॥
कविता अरु पांडित्य की अवधि शारदा पुत्र ।
दिग्विजयी सु विचार दृढ कछुक कहूँ यस सूत्र ॥९७॥
चारौ दिसाहि जु जीति करि आये नदिया मांहि ।
हय कुंजर चौडोल संग फिरैं छत्र की छांहि ॥९८॥
श्री महाप्रभू चैतन्य के दरस प्रभावहि देखि ।
वचन विलास विचार सुनि उप सम भयो विरोधि ॥९९॥
छांडि समृद्ध समाज सब निहि किंचन पन लीन ।
काहू वढि बोलै नहीं संतत भाषैं दीन ॥ १०० ॥
तव तें महाप्रभू विषै अतुल सुदृढ विस्वास ।
जानैं अनुगत आप कौ मानैं प्रभू के दास ॥१॥

तिनके श्री भट्ट जानियो जुगल भजन बलधारी ।
चारि सिष्य तिनके भये परम धरम अधिकारी ॥२॥
श्रीहरिव्यास रु वीरम त्यागी वोहित घमंडी दास ।
इनके सिष्य प्रसिष्य जग जगमग प्रेम प्रकास ॥३॥
तिनमें अधिकारी महा महिमा श्री हरिव्यास ।
जुगल सिष्य तिनके भये भक्ति प्रताप उजास ॥४॥
परसराम पहले भये दूजे सोभू राम ।
निलय सलेमाबाद अरु बूडिया विश्राम ॥५॥
परसुराम के सिष भये स्वामी श्रीहरिवंस ।
श्रीनारायणदास भये तिनके सुजस प्रसंस ॥६॥
श्री वृंदावनदास भये तिनके सद्गुण सींव ।
जिनके भक्ति प्रताप की सुदृढ बंधी है नींव ॥७॥
टीकायत सोभू राम के स्थल बूडिया सुथान ।
तहां विराजत आजु लौं को कहि सकै बखान ॥८॥
सिष इक सोभूराम के श्रीयुत कन्हर दास ।
गुरु आज्ञा बूड़िया तज तिरखू कियो निवास ॥९॥
श्री नारायणदास भये तिनके सिष्य प्रधान ।
श्रीचतुरदास तिनके भये नागा करि आख्यान ॥१०॥
कृष्ण कृपा दरसन भयो ब्रज मंडल अधिकार ।
स्वामी मोहनदास भये तिनके सुजस अपार ॥११॥
जगन्नाथ स्वामी भये तिनके महा कृपाल ।
तिनके माखनदास भये परम धर्म प्रतिपाल ॥१२॥
ऐसे औरौ जानियो साखा की बढवार ।
महा भागवत मंडली सर्व सुखद परिवार ॥१३॥
प्रथम चलनि इनकी कहूँ सनक संप्रदा नाम ।
दूजे निंबादित भये संतन के विश्राम ॥१४॥

Vrindavan Das Govind Kund Vrindavan, Mathura

हरिव्यासी तीजें कहैं वैष्नव सभा प्रमान ।
इनके यस जग विदित हैं मैं कहा कहौं बखान ॥१५॥
चार संप्रदा की रची परनाली परबंध ।
दास मनोहर को कृपा कीजै प्रेम निबंध ॥१६॥
यह संप्रदायबोधिनी कहि जथामति मोरि ।
मन दै जो देखै सुनै तौ पावै निज ठोर ॥११७॥

इति श्रीरसिकसिरोमनि श्रीस्वामीमनोहरदास
विरचिता संप्रदायचतुष्टयवर्णनमयी
संप्रदायबोधिनी संपूर्णा ।

संवत् १७०७ साल की प्रति से लिखी ।

◇◇◇◇

"रसिकाई कविताई जाहि दीनी तिन पाई,
भई सरसाई हिये नव-नव चाय हैं।
उर रंग भवन में राधिकारमण बसैं,
लसैं ज्यों मुकुर मध्य प्रतिबिंब भाय हैं॥
रसिक समाज में बिराज रसराज कहैं,
चहैं मुख सब फूलैं सुख समुदाय हैं।
जन-मन हरिलाल मनोहर नाम पायो,
उनहूँ को मन हरिलीनौ ताते राय हैं॥"
(भक्तमालटीका)

◇◇◇◇

गौड़ीयग्रन्थगौरव:—

सानुवाद संस्कृत भाषा में प्रकाशित—

१—अर्च्चाविधि: (संगृहीत) ।)
२—प्रेमसम्पुट: (श्रीविश्वनाथचक्रवर्त्तीकृत) ।)
३—भक्तिरसतरङ्गिणी (श्रीनारायणभट्टजीकृता) १)
४—गोवर्द्धनशतक (श्रीविष्णुस्वामी संप्रदायाचार्य्य श्रीकेशवाचार्य्य कृत) ।)
५—चैतन्यचन्द्रामृत और सङ्गीतमाधव (श्रीप्रबोधानन्द-सरस्वतीजी कृत) १।)
६—नित्यक्रियापद्धति: (संगृहीत) ।।≈)
७—व्रजभक्तिविलास: (श्रीनारायणभट्टजी कृत) २।।)
८—निकुञ्जरहस्यस्तव: (श्रीमद्रूपगोस्वामी कृत))
९—महाप्रभुग्रन्थावली (श्रीमन्महाप्रभुमुखपद्मविनिर्गता) ।–)
१०—स्मरणमङ्गलस्त्रोत्रम् (श्रीमद्रूपगोस्वामिजीकृत) ।।≈)
११—नवरत्नम् (श्रीहरिरामव्यासजी कृत) ≈)।
१२—गोविन्दभाष्यम् (श्रीपादबलदेवजी कृत) ४।।)
१३—ग्रन्थरत्नपंचकम् १।।)
[१] श्रीकृष्णलीलास्तव: (श्रीपादसनातनगोस्वामि कृत:)
[२] श्रीराधाकृष्णगणोद्देशदीपिका (श्री श्रीरूपगोस्वामिजीकृता)
[३] श्रीगौरगणोद्देशदीपिका (श्रीकविकर्णपूरजी कृता)
[४] श्रीव्रजविलासस्तव: (श्रीश्रीरघुनाथदासगोस्वामिजी कृत)
[५] श्रीसङ्कल्पकल्पद्रुम: (श्रीविश्वनाथ चक्रवर्तीजी कृत)
१४—श्रीमहामन्त्रव्याख्याष्टकम् (सञ्चित) ।)
१५—ग्रन्थरत्नषट्कम् (सञ्चित) ।।)
१६—श्रीगोवर्द्धनभट्टग्रन्थावली ।।≈)
१७—सहस्रनामत्रयम् अथवा ग्रन्थरत्ननवकम् ।।)
१८—श्रीनारायणभट्टचरितामृतम् (श्रीजानकीप्रसादगोस्वामिकृत) ।।
१९—उद्धवसन्देश: (श्रीमद्रूपगोस्वामिबिरचित:) ।≈)
२०—हंसदूतम् (श्रीमद्रूपगोस्वामिविरचितम्) २।।)

२१–श्रीमथुरामाहात्म्यम (श्रीमद्रूपगोस्वामिविरचितम्) ॥≈)
२२–मुरलीमाधुरी (संचित) ।)
२३–राधाकृपाकटाक्षस्त्रोत्रम् ≈)
२४–श्रीपदांकदूतम (श्रीकृष्णदेवजी कृत) ॥)

ब्रजभाषा में प्रकाशित प्राचीन पुस्तकें—

१. गदाधरभट्टजी की वाणी (राधेश्याम गुप्ताजी से प्रकाशित १)
२. सूरदासमदनमोहनजी की वाणी „ ।।।)
३. माधुरीवाणी (माधुरीजी कृता) ॥≈)
४. बल्लभरसिकजी की वाणी ।≈)
५. गीतगोविन्दपद (श्रीरामरायजी कृत) ।)
६. गीतगोविन्द (रसजानिवैष्णवदासजी कृत) ।)
७. हरिलीला (ब्रह्मगोपालजी कृता) ≈)
८. श्रीचैतन्यचरितामृत (श्रीसुबलश्यामजी कृत) ४॥)
९. वैष्णववन्दना (भक्तनामावली) (बृन्दावनदासजीकृता) ≈)
१०. विलापकुसुमाञ्जलि (वृन्दावनदासजी कृता) ।)
११. प्रेमभक्तिचन्द्रिका (वृन्दावनदासजी कृता) ।)
१२. प्रियादासजी की ग्रन्थावली ।≈)
१३. गौराङ्गभूषणमञ्जावली (गौरगनदासजी कृता) ।)
१४. राधारमणरससागर (मनोहरजी कृता) ।)
१५. श्रीरामहरिग्रन्थावली (श्रीरामहरिजी कृता) ।–)
१६. भाषाभागवत (दशम एकादश, द्वादश) (श्रीरसजानि-वैष्णवदासजी कृत) १)
१७. श्रीनरोत्तमठाकुरमहाशय की प्रार्थना ॥)
१८. संप्रदायवोधनी (कविवरमनोहरजीकृता) ≈)
१९. ब्रजमण्डलदर्शन (परिक्रमा) १)

पुस्तक मिलने का पता तथा वी० पी० आदि भेजने का पता—

(१) राधेश्याम गुप्ता बुकसेलर, पुरानाशहर, (वृन्दावन)

मुद्रक—रमनलाल वंसल, पुष्पराज प्रेस, मथुरा ।

श्रीश्रीराधारमणो जयति

श्रीरामशिष्यं कटके सुजन्मं पौगण्डकाले गुरुसान्निधाप्तम् ।
गौरोदयोर्व्यां परियान्तमाशु श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।१

गौराङ्गदासादिभिरुन्मदेन वृन्दावने वासकृतं सहर्षम्।
भावानुरागेण वदन्तमुच्चैः श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।२

गौडीयभक्तै रचिता रसाढ्या उद्दीपिता ग्रन्थवरा हि येन ।
साहित्यरत्नं ब्रजभूषणं तं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।३

विज्ञैः समेतं सुमनःसरस्स्थं ग्रन्थानुलेखं परिशोधयन्तम् ।
सद्भक्तिसिद्धान्तनिधिं सनिष्टं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।४

सौम्यं कृपालुं मधुभाषकण्ठं शुक्लाम्बरं क्षीणतनुं नितान्तम् ।
निःसङ्गमानन्दवपुं महान्तं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।५

लीलास्मरन्तं सततं जपन्तं देवाग्र उन्मत्तपरं नटन्तम् ।
संकीर्तनामोदमोदं प्रसिद्धं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।६

भक्ताधरोच्छिष्टललातिचित्तं स्नेहाभिमूर्तिं चलनातिधीरम्
भक्तानभक्ताञ्च नमन्तमुत्कं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।७

रोमाञ्चकम्पाश्रुतरङ्गयुक्तं मुग्धं प्रशान्तं नितरां हसन्तम् ।
वैराग्यसिन्धुं करुणैकबन्धुं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।८
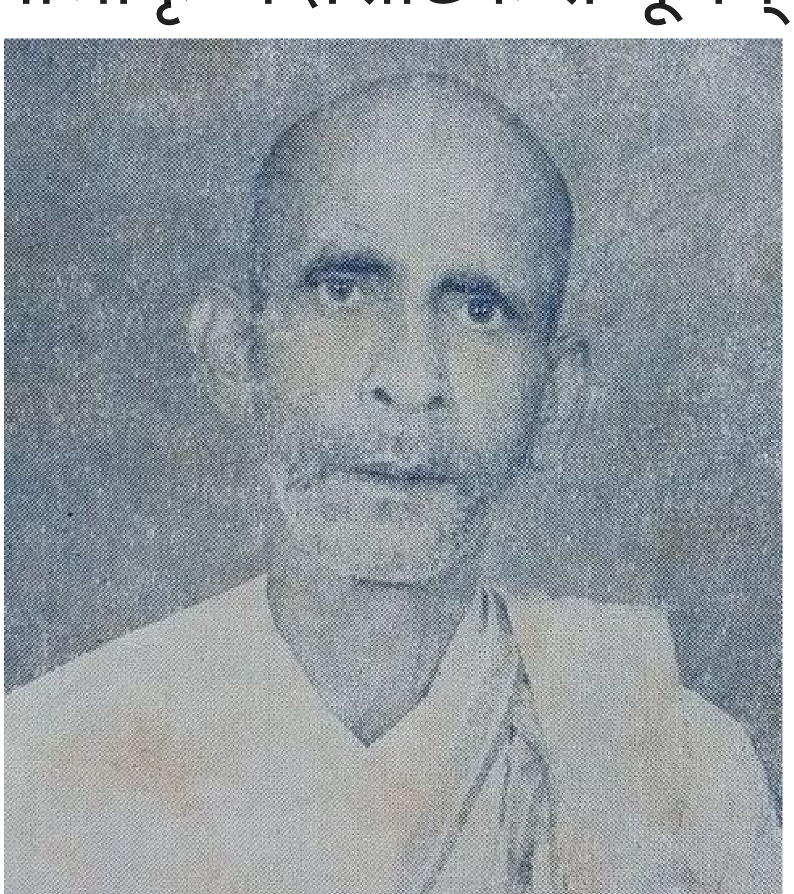
इति श्रीश्रीवृन्दावननिवासिना श्रीश्रीवृन्दावनदासेन विरचितं
श्रीश्रीकृष्णदासाष्टकं सम्पूर्णम्